International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 1; Issue 2; February 2016; Page No. 82-83

२१वीं शदी के उपन्यासों में संस्कृति का पाश्चात्यीकरण

सुनीता रानी

हिंदी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

एक सफल उपन्यासकार का स्वभाव अपनी संतान का कल्याण करने वाले पिता के समान होता है और इसी नाते वह संस्कृतिहीन समाज को ड़राता है, अनुशासित करता है। वही उपन्यास श्रेष्ठ होगा , जिसमें समाज की सारी कुरूपतांए निरूपताएं और वेदंगेपन दर्पण में प्रतिबिम्बत् नजर आ जाए, जो टूटे मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हो। आर्दश उपन्यास में मनुष्य और जीवन मात्र हँसी उड़ाने की ललक नहीं होती अपितु उसका लक्ष्य प्रहार होता है। उन कुरूपय तथ्यों पर जो मानवी प्रगति और जीवन की गतिशीलता में बाधक हो। पाश्चात्य रंग में रंगे युवक विदेशी धुनों पर नाचना, नशे में चुर रहना, कलबों में रातें बिताना उनकी दिनचर्या का अंग है। (चमेली का फूल) 'डॉ० राकेश सक्सेना' का 'विनोद' जो सदाशिव का पुत्र था 'घर में आचरण तो सही रखता था लेकिन घर से बाहर जाते ही ''विनोद क्लब जाता था 'वहां की रंगीन दुनिया उसे बहुत अच्छी लगती थी। रोज नयी लड़की उसके साथ होती। जिसके साथ वह डान्स करता, उसके नृत्य में कभी रॉक एण्ड रॉल का दौर चलता। कभी वह मुग्ध होकर देखता और कभी उसकी प्रेयसी कैबरे नृत्य करती।''[१]

आज माँ-बाप को भी अपना भविष्य उज्जवल ऐसे बच्चे के साथ नजर आता है जो पढ़ाई-लिखाई में भले ही कम हो लेकिन दादागिरी में आगे क्योंकि उन्हें मालूम है कि दादागिरी से शिक्षा तो पूर्ण हो ही जायेगी। आगे की जिन्दगी में भी कामयाब वही होगी और जो आदर्शो पर आधारित है वह खुद तो भूखा मरेगा ही साथ में हमें भी मारेगा। 'कृष्णसुकुमार' का हरिहर जो गिरधर का छोटा भाई था। पढ़ाई कम दादागिरी अधिक करता था। माँ-बाप उसी की प्रशंसा करते थे। गिरधर स्वयं से ही बातें करते हुए बुदबुदा रहा है - ''हरिहर धुआंधार भाषण दे सकता है . . . . हड़ताल करवा सकता है . . . दंगे करवा सकता है . . . पुलिस पर पथराव करवा सकता है . . . बसें फुकवा सकता है। . . . ये ही तमाम बातें तो है जो आगे की सीढ़ी मजबूत करती है। . . . वह आज छात्र नेता है कल जननेता होगा और परसों राजनेता होगा और परसों राजनेता ..... कौन उसके भाग्य पर संदेह कर सकता है भला?... वह मिनिस्टर के इलावा कुछ और बन ही नहीं सकता।[२]

जात-पात की कट्टरता हमारे अंदर इस कदर समाई हुई है कि जात को अपना अहं बनाकर हम अपनी औलाद की संपूर्ण जिंदगी तक तबाह कर डालते हैं। (आकाषपक्षी) 'अमरकांत' के इंजीनियर साहब जब अपने लड़के का रिश्ता लेकर अपने पड़ौसी जो 'बड़े सरकार' के नाम से जाने जाते हैं। उनके पास जाते हैं तो बड़े सरकार जाति-पाति को महत्व देते हुए रिश्ते से इंकार कर देते हैं - ''जाति-पाति तो ऋशि मुनियों का बनाया है। भगवान रामचन्द्र भी जाति-पाति मानते थे। लोग सम्भलकर रहें नहीं तो जब हम लोग फिर आएंगें तो .. ...''[३]

(तृषिता) 'कमलिनी कौल' का मल्हार अपनी बुआ श्यामली को समझाता है कि वह श्रमा का रिश्ता क्यों मंगेशकर से कर रही है वह उसके योग्य नहीं है सिरफ इसीलिए कि वह महाराष्ट्रीयन है। क्या जाति-पाति ज्यादा जरूरी है योग्यता से? इस पर श्यामली चिल्ला उठी ''पंजाबी का बच्चा है बह दुष्ट।'' क्षुब्ध स्वर में श्यामली बोली।

''पंजाबी होना अक्षम्य ....'' ष्यामली ने मल्हार को संकेत से बोलने को रोका।

'मैनें कब कहा अक्षम्य अपराध है। मैनें क्या ठेका ले रखा है। समाज-सुधार का ? नहीं, मैं तो अपनी ही जाति समाज में लड़की को ब्याहूंगी।'' श्यामली बोली।[४]

जाति-प्रथा ने कितने ही युवाओं की जिंदगी को नरक बना दिया। जाति की महता अधिक रखते हुए कई माता-पिता तो अधिक उम्र वाले लड़के से विवाह कर देते हैं सिर्फ यह सोचकर कि वह अपनी जाति का है। (तृष्णा) 'मंजु सिंह' की 'प्रकृति' के पिता उम्र में दस वर्श बड़े इंजीनियर लड़के से विवाह तय करते हैं जो पांच वर्शों से विदेष में रह रहा है - मि० त्रिपाठी। उन्हें जाति एक होने से सब प्रकार से योग्य होगा। विरोध करने पर वह बोले ''लड़के की उम्र थोड़े ही देखी जाती है उसके तो गुण देखे जाते हैं'' इलैक्ट्रिकल इंजीनियर लड़का वह भी लंदन में और सबसे बड़ी बात तो यह है कि अपनी जाति बिरादरी का है।''[५] इक्कीसवीं शदी के उपन्यासकार सचेत साहित्यकार रहे हैं। इनके उपन्यासों में परिवर्तित-सामाजिक-व्यवस्था पर कटाक्ष करके अखण्ड राष्ट्र के लिए सुदृढ़ समाज की कल्पना की गई है। उन्नीसवीं शती में 'हिन्दू जाति का प्रत्येक अंग विकृत हो चुका था। समय की प्रगति के अनुसार समाज में आवश्यक सुधार और परिवर्तन करने के स्थान पर हिन्दू परम्परा की लीक पीट रहे थे। गतानुगतिकता और रूढ़िवाद के अन्य भक्त बन बैठे थे।''[६] जातिपाँति, दहेज, अनमेल विवाह आदि कई प्राचीन रूढ़ियों तथा कठोर नियम बन्धन समाज को जकड़ कर इसकी प्रगति पर कुठाराघात कर रहे थे। समाज का नैतिक पतन हो जाने के कारण ईर्ष्या, द्वेष, मोह, दैन्य, दौर्बल्य, अशक्ति, हिंसा, स्वार्थासक्ति, अकृति, असाहस, भय, संदेह तथा भोग विलास आदि अनेक विकार समाज में पनप रहे थे। इस प्रकार अनेक व्यसनों से ग्रस्त समाज किंकर्तव्यविमूढ़ सा हुआ अधःपतन की ओर जा रहा था।''समग्र रूप से विचार करने पर समाज की सृजनात्मक और नवनवोन्मेषशालिनी शक्ति का था। उसमें नए प्राण, नवीन शक्ति और चेतना फूँकने की आवश्यकता थी।[७]

इक्कीसवीं सदी में कदम रखता आज का हमारा भारतीय समाज भले ही बेटा-बेटी एक होने का नारा लगाए लेकिन अंदर से यह भेद अब तक समाप्त नहीं हुआ है। (तृष्णा) 'मंजू सिंह' की 'सांवली' जो विदेश में रह रही है। जब वह

अपनी मित्र स्वप्निल से मिलती है तो उसे अपने परिवार के बारे मे बताती है कि मेरी बड़ी बेटी मनुहार हायर सैकेण्डरी में पढ़ती है और छोटी बेटी आकांक्ष सेवन स्टैन्डर्ड में है और बाबा अभी नौ वर्श का है, सैकेंड़ स्टैन्डर्ड में पढ़ता है। हंसते हुआ आगे सांवली बोली ''भई बेटियों से तो कोई वंश तो चलता नही है, वंष तो बेटों से ही चलता है, इसीलिए तो हमारे तीन बच्चे हैं।''[८]

हमारे भारतीय समाज में बचपन से ही लड़की को यह एहसास दिलाया जाता है कि वह लड़के की बराबरी नहीं कर सकती। 'सोना चौधरी' के (पायदान) की आंचल जब बुआ के घर जाती है उनकी सहायता के लिए क्योंकि वह बीमार रहती है। वहाँ उसे उसकी बुआ का बर्ताब कुछ अलग ही नजर आता है। आंचल सोच रही है कि वहाँ बीता जीवन कैसा था। ''बुआ के तीन बेटों में से दो मुझसे बहुत बड़े थे। पर बुआ बजाय उन्हें काम बताने के मुझे उनके भी काम करने को कहती। कभी मैं हठ करने लगती की उनके हिस्से का काम भी क्यों करूं? उनसे करवाइए। तब बुआ बोलती वे पढ़ रहे हैं, उनकी पढ़ाई मुश्किल है तब लगता था कि उनकी पढ़ाई, पढ़ाई और मेरी पढ़ाई कुछ नहीं।''[९] कितना फर्क है लडकी और लडके में। (तृषिता) 'कमलिनी कौल' की पूनम भी ऐसे ही तनाव को झेल रही है। पूनम नौकरी करती है और सारी कमाई अपनी मां दुर्गा के हाथ पर लाकर रख देती है उसकी मां दुर्गा उसे केवल दो सौ रूपये पूरे वेतन में से महीन भर के खर्च के लिए देती है। इस पर पूनम का अर्न्तमन क्षोभ से भर उठता है। वह सोचती है ''यही पाई-पाई का लेखा-जोखा देना पड़ता है और ऊपर से स्नेह रस की एक-एक बूंद के लिए तृष्णा थी तृषित हृदय को। यह कहां का न्याय है - पुत्र मनचाहा खाएं, पहने व मनचाही भार्या लाए। उनकी उद्धाम इच्छाओं आकांक्षाओं पर कोई अंकुश नहीं। हर अंकुश है पुत्री निमित। क्या वह मांस-मज्जा मण्डित मानवी नहीं है?''[१०]

''कैसी बेसरम लड़की है। हरामजादी। तुझे नियारी जवानी चढ़ी है। पहले नहीं कहा था, बांध के रक्खो छोकरी को। ज्यादा पर निकल आए हैं। टाँग तोड़ दे कमजात की। लंगडी को बुड्ढ़ा जवान ना दिखेगा।''

तरह-तरह की आवाजें आई। मैं एक बार फिर दम लगा के दौड़ी, फिर पकड़ ली गई।

''चल बहना, ''बहना ने पुचकारा ''करमों का लेखा कोई न मेट सकता।''[११]

कई बार औलाद अनमेल विवाह के कारण विद्रोह पर उतर आती है। (झूला नट) 'मैत्रेयी पुष्पा' का सुमेर माँ के कहने से शादी तो कर लेता है लेकिन पत्नी का स्पर्श भी नहीं करता और शहर में ही दूसरी औरत के साथ घर बसा लेता है। गांव में कभी-कभार आता है तो बहू से बात नहीं करता। इस पर उसकी माँ तड़पते हुए कहती है -

'पढ़ा लिखा बैल निकला सुमेर। बहु को देखते ही कैसा भागता है, ज्यों सोना-चांदी तोड़ लेगी इसके, कि उसके परस से लोहे का हो जाएगा। तार-तार कथरी कोई कहाँ से सिए? एक-न-एक दिन तो चदरियाँ की फाके असलियत की मुनादी कर ही देंगी।''[१२]

निष्कर्षः

मूलतःसच्चे और सार्थक साहित्य की यह ताकत होती है कि वह मूल्यों की आपाधापी और संक्रान्ति का चित्र ही नहीं देता, नए मूल्यों की तलाश और उनकी ओर इशारा भी करता है। न केवल इसने लोक के दावपेच को समझने की नई दृष्टि और व्यवहार की कुशलता ही दी है , अपितु वस्तु - स्थिति की प्रखर और सूक्ष्मतम अनुभूति द्वारा जीवन को नई दिशा भी दी है। यह परिणाम उसी का है कि हम अब अधिक समझदार हुए हैं।[१३] जिस तीव्र सामाजिक राजनीतिक सांस्कृतिक बाध्यता ने व्यंग्य लेखन को सघन किया हैं वहीं आध्यता व्यंग्य विधा के अधतन विकास का कारण भी है। कोई भी साहित्य लेख पाठक को किसी हल्के-फुल्के वातावरण में नहीं ले जाता, अपितु कुछ सोचने के लिए विवश करता है। किस्सागोई से मुक्त धारदार उपन्यास लेखन की विकास-यात्रा का सर्वेक्षण क्रमशः देता है।

संदर्भ ग्रन्थ

१. डॉ० राकेश सक्सेना, चमेली का फूल, पृ० ५०।
२. कृश्णकुमार, इतिसिद्धम, पृ० ६६।
३. अमरकांत आकाषपक्षी, पृ० ६३।
४. कमलिनी कौल, तृशिता, पृ० १३८-१३९।
५. 'मंजु सिंह, तृश्णा पृ० ८१।
६. डॉ० केसरी नारायण गुप्त-हिन्दी भाषा और साहित्य की आर्य समाज की देन पृ० ४।
७. डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय-आधुनिक हिन्दी साहित्य पृ० ११।
८. 'मंजु सिंह, तृश्णा पृ० ११४।
९. सोना चौधरी, पायदान, पृ० १७।
१०. कमलिनी कौल, तृशिता, पृ० १३।
११. मृदुला गर्ग, कठगुलाब, पृ० १४२।
१२. मैत्रेयी पुश्पा, झूला नट, पृ०. ५६।
१३. 'क्या कारण है आप पति-पत्नी से तलाक चाहते हैं 'कमलिनी कौल 'तृषिता' पृ० ६२।